[Shri Raghu Ramaiah]

Members for discussion of the various suggestions. More than that, I cannot add anything.

---

11.53 hrs.

## COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL'S (DUTIES, POWERS AND CONDITIONS OF SERVICE) BILL.

### EXTENSION OF TIME FOR PRESENTATION OF REPORT OF JOINT COMMITTEE.

**श्री एस० एम० जोशी** (पूना): उपाध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित प्रस्ताव पेश करना चाहता हूं :

"कि यह सभा भारत के नियंत्रक और महा-लेखापरीक्षक की सेवा की शर्तों को अवधारित करने तथा उसके कर्तव्य और शक्तियों को विहित करने और तत्संसबत या उससे आनुषंगिक विषयों की व्यवस्था करने वाले विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति के प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने के लिये नियत समय को वर्षाकालीन सत्र (1970) की "प्रथम दिन तक बढ़ाती है।"

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That this House do extend the time appointed for the presentation of the Report of the Joint Committee on the Bill to determine the conditions of service of the Comptroller and Auditor General of India and to prescribe his duties and powers and for matters connected therewith or incidental thereto upto the 1st day of the Monsoon Session (1970)".

*The motion was adopted.*

---

11.54 hrs.

## DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (RAILWAYS), 1969-70—*contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER: The House will now take up further discussion and voting on the Supplementary Demands for Grants (Railways) for which 50 minutes are left.

**श्री सत्य नारायण सिंह** (वाराणसी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं वर्ष 1969–70 के बजट (रेलवे) सम्बन्धी अनुदानों की अनुपूरक मांगों पर बोलते हुए पहले तो यह कहना चाहूंगा कि इस तरह की मांगें हमेशा सदन के सामने पेश की जाती हैं और सदन द्वारा उन्हें स्वीकृति प्रदान की जाती है। उन की चर्चा के दौरान सदन के सभी मैम्बर रेलवे विभाग में क्या त्रुटियां हैं, उसके कार्य में क्या गड़बड़ियां हैं उन के ऊपर यहां सदन में प्रकाश डालते हैं और मंत्री महोदय हमेशा इस बात का आश्वासन देते हैं कि उन के सुझावों पर अमल किया जायेगा और उन खामियों को दूर करने की कोशिश की जायगी लेकिन लगता ऐसा है कि पार्लियामेंट के बन्द हो जाने के बाद बहस बन्द हो जाने के बाद वह सारे मसले भूल जाते हैं और उन के बारे में कोई भी क़दम नहीं उठाया जाता है।

पहली बात मैं यह कहना चाहता हूं मुग़लसराय हिंदुस्तान का सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन है जहां पर कि चारों तरफ़ से रेलगाड़ियां आती जाती हैं। वहां पर जाकर आप देख सकते हैं कि वहां के रेलवे कर्मचारियों के लिये जो जगह बनाई गई है वह कितनी असन्तोषजनक है कि जिसमें कठिन जाड़े में या गर्मी में न तो वह किसी तरीक़े से शीत से बच सकते हैं और न ही लू से बच सकते हैं और उन के लिये काम करना मुश्किल हो जाता है। बारबार इस के ऊपर अधिकारियों का ध्यान खींचा गया लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया और हालत यह है कि आज भी वहां बैठ कर काम करना रेलवे कर्मचारियों के लिये मुश्किल हो जाता है।

दूसरी बात जो मैं आप के सामने कहता हूं वह चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के रहने के लिये की गई आवास व्यवस्था से सम्बन्धित है। आवास की जसी व्यवस्था उन के लिये की गई है उस को देखन से लगता है कि उन्हें इंसान नही समझा जाता है। उन्हें रहने के लिय जो क्वार्टर दिया गया है जिसमें कि वह कर्मचारी अपने तमाम